भारत के स्वतंत्रता संग्राम में गुजरात की महिला पत्रकारों का योगदान

डॉ. गिरीशभाई पी.वाघेला
इतिहास विभाग,
महाराजा कृष्णकुमारजी भावनगर विश्वविद्यालय ,
भावनगर (गुजरात)
girishvaghela84@gmail.com

1. भुमिका

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलनों में असहयोग आन्दोलन (1918-1922) के दौरान गांधीजी के नेतृत्व में वास्तव में महिला आन्दोलन आगे बढ़ा। गांधीजी का संदेश गांव-गांव पहुंचा और देश की आजादी के लिए महिलाएं घर से निकलीं। उस समय देशभक्ति की भावना से प्रेरित होकर सभी बंधनों को पीछे छोड़कर देश भर से महिलाएं स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हुई। नागरिक कानून के उल्लंघन (1930-31) के दौरान लगभग 20,000 बहनें जेल गई।

गांधी के नेतृत्व में सामूहिक भागीदारी ने महिलाओं को पुरुषों के बराबर होना सिखाया। एक समानता थी जो पारंपरिक मान्यताओं से बंधे भारतीय समाज के लिए नई थी।

महिला मताधिकार के मुद्दे पर कांग्रेस ने अपनी मांग उठाई। गांधीजी के नेतृत्व में महिलाओं को यह आह्वान दिया गया था कि उन्हें पुरुषों की तरह ही स्वतंत्रता का अधिकार अर्जित करना होगा और स्वतंत्र महसूस करना होगा। उनके अनुसार महिलाएं देश की आधी आबादी हैं, इसलिए उनकी भागीदारी के बिना देश में कोई भी आंदोलन सफल नहीं हो सकता। उन्होंने कांग्रेस के हर काम में महिलाओं को शामिल किया। राष्ट्रीय कांग्रेस ने सामाजिक और कानूनी अधिकारों के लिए महिलाओं के आंदोलन, विशेष रूप से मताधिकार की उनकी मांग को अपना पूरा समर्थन दिया।

2. गांधीवादी मुक्ति और आंदोलन

गांधी ने आध्यात्मिकता और धीरज के गुणों के लिए महिलाओं का सम्मान किया और हमेशा उनके उत्थान के बारे में सोचा। लेकिन यह इरेक्शन पुरुषों के साथ उनकी सहायक भूमिकाओं की सीमाओं के भीतर वापस आ गया था। वे कभी भी सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी के पक्ष में नहीं थे। उनका विचार था, 'लैंगिक समानता का मतलब व्यवसायों की समानता बिल्कुल भी नहीं है। प्रकृति ने स्त्री और पुरुष दोनों को एक दूसरे का पूरक बनाया है।'

गुजराती अखबारों और नरीचेतना गांधीजी के प्रभाव में राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी जरूर बढ़ी, लेकिन लगभग हर स्तर पर नेतृत्व पुरुषों के हाथ में ही रहा। महिलाओं ने बड़ी संख्या में सत्याग्रह में भाग लिया लेकिन वह भी गांधीजी द्वारा खींची गई सीमाओं के भीतर। 12 यहां तक कि जब महिलाओं ने 1930 में दांडी यात्रा के दौरान भाग लेने की इच्छा व्यक्त की, तो उन्हें मना कर दिया गया और दांडी स्टेशन पर नर्सिंग और खाना पकाने जैसी जिम्मेदारियां सौंपी गई। गांधी का विचार था कि महिलाओं की राजनीतिक शक्ति कातने, बुनने और समाजसेवा के रचनात्मक कार्यों में ही लगाई जा सकती है।

सरोजिनी नायडू और कमलादेवी चट्टोपाध्याय जैसी संभ्रांत महिलाओं को छोड़कर, राजनीतिक मंच पर आने वाली और उस युग में नेतृत्व करने वाली महिलाओं के पुरुष रिश्तेदार - भाई, पति, चाचा, दादा या पिता - क्षेत्र में थे। ये महिलाएं जेल जाने पर आम जनता के सामने अपने पुरुष रिश्तेदारों का प्रतिनिधित्व करती थीं।

इस प्रकार महिलाएं घर की दहलीज से बाहर तो आई लेकिन एक सीमा के भीतर ही। इस अवधि के दौरान महिलाओं में धर्म और जाति के प्रति आस्था भी पैदा हुई और गहरी जड़ें जमाई। फलस्वरूप नारी मुक्ति का मार्ग बहुत दूर नहीं जा सका।

3. गांधी युग पत्रकारिता में महिला मुक्ति आंदोलन

गांधी युग की विशिष्ट विशेषता यह थी कि यह खुले तौर पर राजनीतिक पत्रकारिता का युग था। इस युग की एक विशेषता यह भी थी कि हिन्दी पत्रकारिता जहाँ एक ओर साम्यवादी और समाजवादी गतिविधियों से प्रभावित हो रही थी, वहीं साप्ताहिक और मासिक पत्रिकाओं के स्थान पर दैनिक समाचार पत्रों का प्रकाशन होने लगा था। पंडित अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी इसे 'दैनिक पत्रकारिता का युग' कहते हैं।'

इस काल में उत्तर हिन्दुस्तान में हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं और दैनिक पत्रों की बाढ़ सी आ गई। कलकत्ता से शुरू हुए पत्रकारिता के सफर में बनारस, मुंबई, सौराष्ट्र और मद्रास अहम पड़ाव बने. इन चार स्थानों से और इसके आसपास कई क्षेत्रीय भाषा और हिंदी समाचार पत्र प्रकाशित हुए। जिसमें कर्मवि 2 (1920), आज (1920), नवजीवन (1921), समाज सेवक (1921), माधुरी (1922), चांद (1922), समन्वय, अर्जुन, मतवाला, सैनिक, सुधा, विशाल भारत, जागरण आदि शामिल हैं। उस युग के प्रतिनिधि पत्र हैं

'नवजीवन' के बाद गांधीजी ने सर्वोदय पत्रकारिता के तहत हरिजनपत्र की शुरुआत की। इसने सितंबर 1933 से 'हिंदी हरिजन' का प्रकाशन शुरू किया। यह प्रकाशन पहले गुजराती और अंग्रेजी में प्रकाशित होता था। इस दौरान अजमेर से हीराभाऊ उपाध्याय ने त्यागभूमि मासिक की शुरुआत की। 1938 में सेवाग्राम आश्रम से 'सर्वोदय' मासिक प्रारंभ हुआ। इसके संपादक काकासाहेब कालेलकर और दादा धर्माधिकारी थे। इसी प्रकार दिल्ली हरिजन सेवक संघ के तत्वावधान में साप्ताहिक 'हरिजन सेवक' प्रारंभ किया गया। उन्हें एक संपादक वियोगी हीर मिला। इस युग में महिलाओं के लिए कुछ अलगाववादी पर्चे प्रकाशित हुए।

3.1 गुजराती महिला पत्रकार और महिलाओं के लिए पत्रकारिता

गुजराती पत्रकारिता अब लगभग ढाई सदी पुरानी हो चुकी है। अपनी स्थापना से लेकर आज तक, गुजराती पत्रकारिता ने एक भी लक्ष्य का पीछा नहीं किया है। समय के साथ इसका मिशन, कार्य की गति और पत्रकारिता का प्रवाह बदल गया है। गुजराती भाषा की पत्रकारिता ने भी विषयों की विविधता को बनाए रखते हुए जीवित रहने के संघर्ष का अनुभव किया है।

महिलाएं, जो दुनिया की आबादी के आधे से थोड़ा कम हैं, पत्रकारिता के कई विषयों में से एक हैं। अपनी स्थापना के बाद से पत्रकारिता अपने केंद्र में 'श्री' के साथ दृढ़ता से जुताई कर रही है। महिलाओं के लिए पत्रकारिता को दो प्रमुख भागों में बांटकर महिलाओं के लिए पत्रकारिता, महिलाओं के लिए पत्रकारिता और इसकी गहराई से जांच करके पत्रकारिता को भावना के अनुसार भागों में बांटा जा सकता है। उदाहरण के लिए महिलाओं के उद्धार के लिए एक करुणामय पत्रकारिता, पुरुषों द्वारा एक गंभीर पत्रकारिता, महिलाओं को समान बनाने के उद्देश्य से की गई समाज सुधारवादी पत्रकारिता, दूसरी ओर महिलाओं ने भी महिलाओं के लिए लिखा, पत्रकारिता के क्षेत्र को जोता। लेकिन गौरव, दया या समाज सुधारकों के बजाय महिलाओं द्वारा महिलाओं के लिए लिखे गए लेखन में क्रोध, करुणा, शांति और आंदोलन ने केंद्र स्थान ले लिया।

महिलाओं ने पुरुषों की तुलना में कई साल बाद शिक्षा प्राप्त करना शुरू किया। महिलाओं के लिए गैर-औपचारिक शिक्षा का एक लंबा इतिहास रहा है। लेकिन औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद महिलाएं पत्रकारिता या उससे जुड़े क्षेत्रों में किसी न किसी रूप में अपना योगदान देने के लिए तैयार रहती हैं। पत्रकारिता और साहित्य के बीच बहुत महीन रेखा होती है। दोनों शायद अन्योन्याश्रित हैं, यह भी कहा जा सकता है। अतः पिछली डेढ़ शताब्दी में शिक्षा के प्रभाव से उस युग में महिलाओं ने साहित्य की रचना की। यह कहा जा सकता है कि महिलाओं ने महिलाओं के लिए पत्रकारिता के क्षेत्र में जोत डाली।

3.2 गुजराती महिला पत्रकार

3.2.1 कृष्णगौरी हीरालाल रावल

कृष्णागौरी हीरालाल रावल का जन्म 1871 में पंचमहल जिले के लूनावाड़ा गांव में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। कम उम्र में शादी हो गई, साथ में पढ़ाई की और बाद में अध्यापन के पेशे से जुड़ गए। उन दिनों लड़कियों की शादी कम उम्र में कर दी जाती थी। इसलिए बालिका शिक्षा का प्रश्न महत्वपूर्ण था। उन्होंने कई लड़कियों को लड़कियों के स्कूलों में भर्ती कराया और हरगोविंददास कांतावाला के साथ बागवानी और बाल पालन जैसे विषयों की शुरुआत की। उन्होंने 'सुंदरी सुबोध' नामक गोष्ठी में लेख लिखकर उन दिनों चल रहे पाठ्यक्रम की रोचक जानकारी दी है। आज के गृह विज्ञान महाविद्यालयों में पढ़ाया जाने वाला पाठ्यक्रम और बाल पालन तथा बागवानी जैसे विषय कृष्णागौरी की सोच का परिणाम हैं।

कृष्णागौरी की कविताएं, लेख उस समय के अखबारों और पत्रिकाओं में छपते थे। उन्होंने 1897 में उपन्यास लिखना शुरू किया और 1899 में 'सदगुनी हेमंतकुमारी' संसारसुधारा का कहानी-उपन्यास प्रकाशित हुआ। उन्होंने यह उपन्यास काफी शोध करने के बाद लिखा है। इसमें हेमंतकुमारी की जीवन गाथा बहुत सटीक, सरल भाषा में और आज के समय में भी उपयोगी है। उस दौर में लिखे गए इस सामाजिक उपन्यास पर हमारे लेखकों या आलोचकों का कहीं ध्यान नहीं गया। उस समय उन्हें 'बुद्धिप्रकाश', 'हितेच्छू' और 'सुदर्शन' में भी सराहा गया था। 'गुजरात स्कूल पेपर' के जून 1890 के अंक में खेड़ा जिले के शिक्षा निरीक्षक करीम अली नानजियानी ने कहा: 'धार्मिक हेमंतकुमारी महिलाओं के लिए अमृत का प्याला है।' सुप्रसिद्ध साहित्यकार केशव हर्षद ध्रुव, प्रो. काशीराम दवे जैसे गणमान्य लोगों ने इसकी सराहना की है। प्रो दवे ने लिखा, 'यह एक महिला के पहले प्रयास के तौर पर प्रोत्साहन की हकदार है।

कृष्णागौरी ने बतौर लेखक अपने करियर की शुरुआत 'बुद्धिप्रकाश' से की थी। 1895 में सितंबर के अंक में 'महिला शिक्षा को बढ़ावा देने का मुख्य साधन या लड़कियों के स्कूलों की आबादी बढ़ाने' शीर्षक से उनका लिखा एक लेख प्रसिद्ध हुआ। 1912 में 'सुंदरी सुबोध' के दिसंबर अंक में उनके दो लेख: 'गृहमंदिरनी स्वच्छता' और 'सुंदरी सुबोध और उसके लेखक', साथ ही 'एक महिला लेखक द्वारा अपनी बेटी को लिखा गया पत्र' 'में प्रकाशित हुए। बुद्धिप्रकाश'। इसमें उनकी पुत्री कुसुमगौरी को 'स्त्रीहितोपदेश' पढ़ने की सलाह दी गई है। 1907 में विद्याबहन नीलकंठ ने 'गुलशन' के सचित्र अंक को पढ़ने की सिफारिश की। कृष्णगौरी स्वयं लिखती, पढ़ती और सुनाती हैं। 'सुंदरी सुबोध' उन्होंने अनेक बहनों को उपहार भेजे। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि नारी शिक्षा और नारी संस्कृति की उनकी उच्च भावना कितनी प्रखर है। वे हमेशा महिलाओं के उत्थान के लिए सजग रहते थे। उस दौरान वह गुजरात वर्नाक्युलर सोसाइटी, प्रार्थना समाज, बाल विवाह निषेध समाज, गुजरात हिंदू संसार सुधरा समाज जैसे संगठनों के सदस्य थे। उन्होंने 'इतेच्छू' में बाल विवाह, जबरन वैधव्य पर मार्मिक लेख लिखा। सूरत की जमनाबेहन सक्के ने इस घटना के बारे में लिखा है कि 'उन्होंने गरीबों और परित्यक्त बहनों के लिए एक सेवासदन शुरू किया'। कृष्णा गौरी एक निबंधकार, उपन्यासकार, शिक्षाविद् और समाज सुधारक थीं। उनके समय में जो भी अवसर उपलब्ध थे, उन्होंने अध्ययन और लेखन के लिए उनका सदुपयोग किया। 1905 में 79 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।

3.2.2 जमनाबाई पंडिता

जमनाबाई पंडिता (1860 से 1908) को गुजरात की पहली नारीवादी क्रांतिकारी विद्रोही महिला कहा जा सकता है। उन्होंने 'स्त्रीधर्म' और 'श्रीपोकार: अर्ध दुनिया ते लुता' नाम से दो पुस्तकें लिखी हैं। जिसमें विधवा विवाह का विरोध करने वालों के विरुद्ध लेख में शास्त्रों के आधार पर दूसरी पत्नी प्रथा, बाल विवाह, वधू विक्रय, दहेज प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया गया है। हालाँकि इन बुराइयों के लिए पुरुषों को जिम्मेदार ठहराया जाता है, लेकिन उनमें बहुत पुराने आर्य संस्कार हैं। उनकी पुस्तक 'श्रीपोकार' गुजरात वर्नाक्युलर सोसाइटी द्वारा प्रकाशित की गई थी। 'पंडिता' ज्ञानी और दर्शनशास्त्र में पारंगत थीं। जमनाभाई साक्षर माने जाते थे। वह अर्थशास्त्र, तर्कशास्त्र, समाजशास्त्र, संस्कृति और दर्शन में भी पारंगत थे।

3.2.3 ज्योत्सना बहन शुक्ला

ज्योत्सनाबेन शुक्ल का जन्म 8 अगस्त, 1894 को सूरत के एक नगर परिवार में हुआ था। उन्होंने कक्षा सात तक गुजराती का अध्ययन किया। उस समय की परंपरा के अनुसार 13 साल में उनकी शादी हो गई। पति की 20 मई को मौत हो गई थी। विधवा के दुखों का अनुभव किया। पिता उन्हें 'किकुभाई' उपनाम से बुलाते थे। घर पर गुजराती, संस्कृत सीखना; महान देशभक्तों

की बातें कर देशभक्ति के बीज बोए। 1907 में जब लोकमान्य तिलक महाराज को दण्डित किया गया तो उन्होंने विलायती वस्त्रों का त्याग कर दिया। घर में रहकर अंग्रेजी, मराठी की पढ़ाई की। साहित्य, कविता, कहानियाँ, उपन्यास रचे। राष्ट्रीय प्रेम के रंग में रंगे 'मुक्तिना रास', 'आकाशनान फूल', 'बापू', 'बंदिना मुक्तिगान' के नाम से उनके काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में उनका योगदान अहम है। 1921 में 'विनोद' नामक मासिक शुरू किया, 1922 में 'चेतन' नामक मासिक के सह-संपादक के रूप में लिया गया। 1928 में उन्होंने 'सुदर्शन' नामक पत्रिका के सह-संपादक का पद स्वीकार किया, जो बाद में दैनिक समाचार पत्र बन गया। उनके अगरती खण्ड से क्रुद्ध सरकार ने 'सुदर्शन' और प्रेस दोनों को सील कर दिया। 1959 से 1968 तक उन्होंने जन्मभूमि समूह के पत्रों के सूरत दैनिक के सम्पादक के रूप में उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य किया। पत्रकारिता के क्षेत्र में उनकी महत्वपूर्ण और निडर पत्रकारिता की सराहना करते हुए 'टाइम्स ऑफ इंडिया' ने उन्हें 'फायरिंग लेडी जर्नलिस्ट' कहा। 1976 में 83 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।

3.2.4 उर्मिला मेहता

1930-31 के सत्याग्रह आंदोलन में पूरे देश और गुजरात की महिलाओं ने अभूतपूर्व भाग लिया। इसके फलस्वरूप मई 1931 में सूरत से 'स्त्री शक्ति' नामक पत्रिका का प्रकाशन हुआ। विशेष रूप से महिलाओं के मुद्दों पर चर्चा करने वाला पहला साप्ताहिक उदारवादी उर्मिला मेहता था। तब सूर्यलक्ष्मी धर्मदास थीं। गांडीव साहित्य मंदिर, सूरत से प्रकाशित यह पत्रिका तीन वर्षों तक ही लोकप्रिय रही।

3.2.5 विजयलक्ष्मी त्रिवेदी

विजयलक्ष्मी त्रिवेदी का जन्म 1889 में भावनगर में हुआ था। दिसम्बर 1910 के 'सुंदरी सुबोध' में लिखा उनका लेख 'मानव जीवन की सफलता' सर्वविदित हुआ। उन पर स्वदेशी आंदोलन का प्रभाव था। शादी के केवल ग्यारह साल बाद 1913 में 24 साल की उम्र में उनका निधन हो गया, जिसके बाद दो बेटियों का जन्म हुआ। 1914 में उनका लेख 'स्वदेशप्रेम' मरणोपरांत प्रकाशित हुआ। इसमें वे स्त्री शिक्षा ग्रहण करें तो यह सीधे देश सेवा में काम आएगी। उन्होंने 'वसंत', 'साहित्य', 'सुंदरी सुबोध', 'बुद्धिप्रकाश' जैसी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में कविताओं और लेखों के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए।

वे काव्य में विख्यात महुवा हरसुखगौरी वामनराव को अपना गुरु मानते थे। हरसुखगौरी की 'सती सीमांतिनी', तारा के साथ-साथ हरिश्चन्द्र विरह और ऋणशृंग का संकलन था। विजयलक्ष्मी की कविताएं भी काफी भावुक कर देने वाली हैं. उन्होंने 'गृहलक्ष्मी' के बारे में उस समय के पुरुषों के दोहरे रवैये का कड़ा विरोध किया और समान अधिकारों की मांग की।

3.2.6 विद्याबेहन नीलकंठ

उनका जन्म 1 जून 1876 को अहमदाबाद में हुआ था। उनका विवाह 1889 में कम उम्र में लेखक रमनलाल नीलकंठ से हुआ था। शादी के बाद पति के सहयोग से वह पढ़ाई कर पाई। 1901 में, वह और उनकी बहन शारदाबेन मेहता गुजरात की पहली महिला स्नातक बनीं। नारीकुंज (1950), फोरम (1955), गृहदीपिका (1931), ज्ञानसुधा (1950) में समाज सुधार पर लेख प्रकाशित हुए। प्रो घोंडो केशव कर्वे की जीवनी 1913 में लिखी गई थी। उन्होंने 'महिला मित्र' पत्रिका का संपादन किया। 1943 में, वह गुजराती साहित्य परिषद (वड़ोदरा) के 15वें अधिवेशन की पहली महिला अध्यक्ष थीं। उन्होंने 1925 में अहमदाबाद में आयोजित पत्रकार सम्मेलन में 'गुजराती पत्रदर्शन' तैयार किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने 'गुजरातनी श्रीकावियो' तथा व्यंग्य निबंध 'त्राण शोकादेवियो', 'रूदन परिषद' आदि भी लिखे। 1907 में 'सुधासुहासिनी' और 1915 में 'हिंदुस्तान में महिलाओं की सामाजिक स्थिति', 'हिम्मतलाल का साहस' नाटक भी लिखे। वह 1925 से 1957 (बत्तीस वर्ष) तक गुजरात वर्नाक्युलर सोसाइटी के मंत्री थे। 1926 में उन्हें 'कैसर हिंद' पुरस्कार मिला। 1957 में उनकी मृत्यु हो गई।

3.2.7 शारदाबेन मेहता

उनका जन्म 26 जून 1822 को हुआ था। उन्होंने 'ताड़ सरोवर', 'द लेक ऑफ पाम' का अनुवाद, 2मेशचंद्र दत्त द्वारा फ्लोरेंस नाइटिंगेल की जीवनी 'दयानी देवी' का अनुवाद, 'बाल गृह शिक्षा', 'विकृतचित्र', पुराणों से बच्चों की कहानियाँ, प्राचीन

किशोर कहानियाँ भी लिखी हैं। उनकी आत्मकथा 1928 में 'जीवनसंभारण' के रूप में प्रकाशित हुई। विद्याबेहन नीलकंठ द्वारा अनुवादित 'सुधासुहासिनी' और 'हिंदुस्तान के सामाजिक जीवन में महिलाओं का स्थान' किया है

3.2.8 विनोदिनी नीलकंठ

उनका जन्म 1907 में अहमदाबाद में हुआ था। 1928 में गुजरात कॉलेज से बी.ए., 1930 में मिशिगन विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र और शिक्षा में एम.ए., अहमदाबाद में विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों और शैक्षणिक संस्थानों के डीनशिप। 1940 से 1987 तक 'गुजरात समाचार' के 'घरघरनी ज्योत' स्तंभ का संपादन। 1960 से अखिल हिन्द महिला परिषद के त्रैमासिक मुखपत्र 'उजास' का संपादन। गहरी जुताई होती है। उन्होंने कई पुस्तकें लिखी हैं। कहानी, यात्रा, जीवनी निबंध जैसे क्षेत्रों में उनका

3.2.9 लाभुबेह्न मेहता

उनका जन्म 1915 में हुआ था। 1937 में बी.ए. जीवन भर सौराष्ट्र, फूलछब, अखंडानंद, जन्मभूमि प्रवासी जैसी पत्रिकाओं में कॉलम लिखे हैं। 'गृहमाधुरी' मासिक का संपादन संभाला है। उन्होंने कई पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

3.2.10 जयवती बहन देसाई

जयवतीबेहन देसाई का जन्म 1899 में हुआ था। श्रीसेवा के काम और साहित्यिक जीवन में डूबी, उन्होंने वडोदरा में चिमनबाई श्रीसमाज के माध्यम से उभरती हुई बहनों को सेवा का पाठ पढ़ाया। वड़ोदरा राज्य सरकार ने उनके कार्यों की सराहना करते हुए उन्हें 'राज्य रत्न' की उपाधि से सम्मानित किया। उन्होंने वर्षों तक स्त्री मासिक 'गुणसुंदरी' का संपादन किया। इस पत्रिका ने गुजरात की पत्रकारिता और विशेषकर महिला पत्रकारिता में एक मौलिक भूमिका निभाई।

3.2.11 सरोजनी मेहता

(विद्याबहन नीलकंठ की पुत्री) अहमदाबाद में जन्मी। 1925 से 'भिगनी समाज' नामक पुस्तिका का संपादन किया। उन्होंने अमरवेल नामक मूल उपन्यास के साथ-साथ श्रीजीवन पर अन्य पुस्तकें भी लिखी हैं। 'वलतन पानी' को गुजरात राज्य पुरस्कार मिला है।

3.2.12 हंसभान मेहता

हंसभान मेहता का जन्म 1893 में सूरत में हुआ था। लंदन में पत्रकारिता और समाजशास्त्र में शिक्षित। वे बच्चों की मासिक 'पुष्पा' के संपादक और कई वर्षों तक वड़ोदरा विश्वविद्यालय के कुलाधिपति भी रहे। उन्होंने कई बच्चों की किताबें लिखी हैं।

3.2.13 बबी बहन भरवाड़ा:

बबी बहन भरवाड़ा 1940 से 'आरसी' मासिक की संपादक थीं। उन्होंने दैनिक 'प्रभात' में बहनों के खंड को भी संभाला।

3.2.14 अन्य महिला पत्रकार

सौदामिनी व्यास कई वर्षों तक वार्षिक अंगना की संपादक रहीं। सरोज पाठक दैनिक 'गुजरातमित्र' में स्तंभकार होने के साथ-साथ कहानीकार, निबंधकार, उपन्यासकार के रूप में उनकी विभिन्न पुस्तकें प्रकाशित हुईं रंभाबेन गांधी 1970 से 1977 तक जैन समाज पत्रिका की संपादक रहीं। नाटककार, गीतकार, निबंधकार, कहानीकार, हास्य कलाकार और आकाशवाणी मुंबई के साथ सक्रिय थे। धीरूभान पटेल उपन्यासकार, नाटककार, कथावाचक, जन्मभूमि से प्रकाशित साप्ताहिक 'सुधा' के संपादक। कल्कि ने 1933 से प्रकाशन शुरू किया। 1980 में रंजीतराम गोल्ड मेडलिस्ट थे। समाज कल्याण बोर्ड के मासिक 'समाज' के संस्थापक संपादक पुष्पबेहन मेहता ने संक्षेप में भारती साहित्य संघ की बहनों की मासिक 'भगिनी' का संपादन किया। 1955 में पद्म भूषण और 1983 में 'जानकीदेवी बजाज' पुरस्कार से सम्मानित। सौराष्ट्र के मालधारी के जीवन को दर्शाने वाले उपन्यास,

कहानियां प्रकाशित हो चुकी हैं। वे विकासगृह और ज्योतिसंघ के संस्थापक और प्रवर्तक थे। प्रेमिला मेहता राजकोट में बार्टन फीमेल ट्रेनिंग कॉलेज की महिला अधीक्षक और 'गुनसुंदरी' की संपादक थीं। लक्ष्मी बहन गो. दोसानी 'समाजजीवन' मासिक के संपादक थे। रमाबेहन एम. देसाई गुजरात विद्यापीठ में सेंटर फॉर वोकेशनल एजुकेशन, ट्रेनिंग एंड रिसर्च के निदेशक थे और मासिक 'लोकजावन' के संपादक थे। जया मेहता 'सुधा' और 'विवेचन' पत्रिकाओं की सह-संपादक हैं और कई संकलनों और आलोचनात्मक पुस्तकों की लेखिका हैं। ताराबेहन मोदक बच्चों की कहानियों के लेखक थे और दक्षिणामूर्ति भावनगर की 'शिक्षणपत्रिका' के संपादक थे। 'भारती वैद्य हिंदुस्तान' दैनिक के संपादकीय विभाग और आकाशवाणी, मुंबई के समाचार विभाग में काम किया। जयंतिका जयंतभाई ने 1955 से 1965 तक मासिक 'उर्मी नवरचना' का गृह मंगल खंड संभाला। 1960 से, वह अखिल हिंद महिला परिषद के त्रैमासिक मुखपत्र 'उजास' की संस्थापक संपादक बनीं। 1982 से स्वश्रयी महिला सेवा संघ। वे 'सेवा' द्वारा शुरू किए गए पाक्षिक 'अनसूया' के संस्थापक संपादक भी हैं। उनके कई लेख गुजरात समाचार, संदेश, श्री, श्रीजीवन आदि परिपत्रों में प्रकाशित हुए हैं। विकासगृह के संस्थापक श्री पुष्पबेहन मेहता की मृत्यु के बाद उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए 1989 में स्मृतिग्रन्थ 'महिलागौरवण मशालची' का संपादन किया गया। कुंदनिका कपाड़िया 1955 से 1957 तक 'यात्रीक' और 1962 से 1980 तक 'नवनीत' की संपादक रहीं। उन्होंने कहानियां और उपन्यास दिए हैं। 'सात कदम आसमान की ओर' उनकी प्रसिद्ध कृति रही है। वर्षा अदलजा 1975 से 77 तक जन्मभूमि की बहनों की पत्रिका 'सुधा' की संपादक रहीं। सुहास ओझा जन्मभूमि की 'सुधा' पत्रिका से जुड़े थे। नीरा देसाई 'पडकर' पत्रिका की संपादक, लेखिका और प्रसिद्ध समाजशास्त्री हैं। मीरान भट्ट भूमिपुत्र के संपादक हैं। उनकी जीवनी और साथ ही परिचयात्मक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। तारु कजारिया जन्मभूमि समूह के समाचार पत्रों के आवधिक खंड के संपादक हैं। कलावती वोरा 'जनसंदेश' और 'विकास' पत्रिकाओं की संपादक हैं। चरित्र कथाओं की पुस्तकें उन्हीं के नाम से हैं। वीना बहन कांतिलाल शाह भगिनी समाज पत्रिका की संपादक और कई परिचयात्मक पुस्तकों की लेखिका हैं। सुष्मिता प्रमुख अखिल हिंद महिला परिषद, अहमदाबाद शाखा के त्रैमासिक मुखपत्र 'नवनिर्माण' में 1960 में एक वर्ष के लिए और ज्योतिसंघ के पैम्फलेट का संपादन किया। धैर्यबाला वोरा जन्मभूमि यात्री के संसारचक्र खंड की संपादक हैं। 1950 से 1967 तक सत्यवती शाह ज्योतिसंघ से जुड़ी रहीं और 'गुजरात समाचार' में सत्यघाट पर आधारित घटनाएं और कार्टून प्रकाशित हुए। वे 'सामाजिक स्वास्थ्य' पत्रिका के संपादक भी हैं। हर्षिदा पंडित 'गुजरात समाचार' के मुम्बई परिशिष्ट तथा 'श्री' साप्ताहिक में 'मानसी' नामक स्तम्भ लिखती थीं। बाद में श्री, मुंबई समाचार, संदेश, समकालिम और जन्मभूमि में मनोविज्ञान पर लेख लिखे। अरुणा देसाई एक मजबूत इरादों वाली सामाजिक कार्यकर्ता, वडवान में विकास विद्यालय की संस्थापक और 'विद्यालय' पत्रिका की संपादक हैं। प्रीति शाह साप्ताहिक कॉलम 'आजकल', 'गुजरात समाचार' के 'अवतरण' के अलावा नवचेतन मासिक का संपादन करती हैं और नियमित रूप से अपने कॉलम 'चिंतनिका' और 'मधपूडू' लिखती हैं। विश्वकोश ट्रस्ट में महत्वपूर्ण कार्य भी करता है।

उसके बाद 'श्री' की स्मृति बहन शाह, 'स्त्री' की लीलाबेन पटेल, 'सखी' की सीता बहन शाह और पद्मा बहन ने जनसत्ता के महिला वर्ग की संपादक का काम संभाला। पद्मा बहन विकासगृह की संपादक हैं, जो विकासगृह का एक पैम्फलेट है। साथ ही उनके कई पत्र-पत्रिकाओं और दैनिकों में कॉलम हैं।

निष्कर्ष :

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन मे गांधीजीका बहुत ही बडा हात रहा है। जीन्होने महिला वर्ग को शामिल कर इस आंदोलन को जनआंदोलन बना दिया. जिससे महिला पत्रकारिता को बढावा मिला। गुजराती अखबार 'द टाइम्स ऑफ इंडिया' गुजरात में टाइम्स ऑफ इंडिया समूह द्वारा शुरू किया गया था। इसका शनिवार का परिशिष्ट 'महिला टाइम्स' के रूप में आया। पुनीता हर्षे (त्रिवेदी) ने 'टाइम्स' के बंद होने के बाद इसके संपादक के रूप में और जयहिंद की पत्रिका 'सखी' के संपादक के रूप में काम किया।

स्मृतिबेहन शाह गुजरात समाचार के 'श्री' की संपादक हैं। बेला ठाकर ने कई वर्षों तक इसके कार्यकारी संपादक और संपादक के रूप में कार्य किया। फिलहाल यह साप्ताहिक ठेका एक एजेंसी को दिया गया है।

संदेश डेली के 'स्त्री' साप्ताहिक के संपादक लीलाबेन पटेल और रीताबेन पटेल हैं। रूपम शाह कई वर्षों से इसके कार्यकारी संपादक और प्रबंध संपादक के रूप में काम कर रहे हैं।

गीता कपूर 'गृहशोभा' पत्रिका के गुजराती संस्करण की संपादक के रूप में काम करती हैं। अहमदाबाद स्थित कार्यालय में बहुत सारा अनुवाद कार्य किया जाता है। यदि सामूहिक कार्य सामाजिक या व्यक्तिगत लाभ के बजाय कल्याण के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए किए जाते हैं, तो इसका प्रभाव दीर्घकालिक रहता है। पाठकों, ग्राहकों, जनता, सरकार और कर्मचारियों की दीर्घकालीन 'सद्भावना' एक समाचार पत्र के लिए अल्पकालिक 'लाभ' से अधिक लाभदायक सिद्ध हो सकती है। स्त्रियों को 'बद्ध' से 'बुद्ध' (प्रबुद्ध) बनाने के समाचार पत्रों के कार्य को नारीशेतन का कार्य कहा जा सकता है।

संदर्भ :

१. हरणे, पुनिता, अरुन; गुजरती अखबारो अने नारीचेतना, गुजरात विद्यापिथ, अहम्दाबाद, २००४

२. महेता, शिरिन, गुजरातमा नारिचेतना, दर्शक इतिहास निधि, अहम्दाबाद, २००९

३. कांत मीरां, अंतरराष्ट्रीय महिला दशक और हिन्दी पत्रकारिता,

४. दयाल, यासिन, अखबारीनु अवलोकन

५. महेता, मकरंद, महेता, शिरिन; गांधियुग पहेलानी स्त्रि-सामायिको १८५७ – १९१५ माध्यमो अने महिलाओ विस्तरति क्षितिजो, सकाय पेपर ट्रस्ट, पूणे